माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता पर निष्पादन कला समेकित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन

पीएच.डी.(शिक्षा शास्त्र)

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट

(डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा

को प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

2020

निर्देशक **शोधार्थिनी**

प्रोफेसर ए. के. कुलश्रेष्ठ प्रीती

डिपार्टमेंट ऑफ पेडागोजिकल साइंस, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा–282005

2020

1.0 प्रस्तावना

शिक्षा का उददेश्य मानव का सर्वांगीण, समरस, स्वभाविक तथा सम्पूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त करना है। शिक्षा मानव को एक मनुश्य बनाती है। शिक्षा में उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविश्ट है जो इस प्रकार कौशलों, व्यापारों, मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यविशयक के उत्कर्श पर केन्द्रित है। शिक्षा ,समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस प्रकार से शिक्षा एक उपकरण के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेश को समाज से जोडने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्क्रति की निरंतरता को बनाये रखती है। बालक शिक्षा द्वारा समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है और वह समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेश के इतिहास से अभिमुख होता है। सर्वपल्लवी राधाकृश्णन जी कहते है कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिश्क का सही प्रयोग किया जा सकता है। शिक्षा आयोग (1964–66) के अनुसार "शिक्षा राश्ट के आर्थिक समाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है।"

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक सामाजिक प्राणी की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। डा0 राधाकृश्णान् (1948) के अनुसार –"शिक्षा मानव तथा समाज का निर्माण करने वाली प्रक्रिया है।" शिक्षा एक सजीव गतिशील प्रक्रिया है। इसमें अध्यापक और शिक्षार्थी के मध्य अन्तःक्रिया होती रहती है। और सम्पूर्ण अन्तःक्रिया किसी लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है। शिक्षक और शिक्षार्थी शिक्षाशास्त्र के आधार पर एक दूसरे के व्यक्तित्व से लाभान्वित और प्रभावित होते रहते हैं और यह प्रभाव किसी विशिश्ट दिशा की ओर स्पश्ट रूप से अभिमुख होता है। बदलते समय के साथ सम्मपूर्ण शिक्षा–चक्र गतिशील है। उसकी गति उचित दिशा में हो रही है। इस दिशा का लक्ष्य निर्धारण शिक्षाशास्त्र करता है। शिक्षा के उददेश्यों के निर्माण का आधार :– शिक्षा के उददेश्यों का सम्बन्ध सम्पूर्ण समाज के समस्त बालकों से है। अतः इनके निर्माण का कार्य अत्यन्त उत्तरदायित्वपूर्ण है। जॉन ड्यूवी (1859.1952) के अनुसार "शिक्षा उन सब शक्तियों का विकास है, जो व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह वह समाज के साथ समायोजन कर सके और अपनी संभावनाओं की पूर्ति कर सके। बालकों में

अनेक प्रकार की शक्तियॉ विद्यमान है। इन शक्तियों का विकास शिक्षा द्वारा होता है। शिक्षा के अभाव में ये शक्तियॉ निश्प्राण है।" अतः इस सम्बन्ध में समाज के बालकों तथा शिक्षा के सिद्धान्तों को दृश्टिगत रखते हुए विचार विनिमय गूढ़ चिन्तन की आवश्यकता है जिससे शिक्षा के वैज्ञानिक तथा लाभप्रद उददेश्यों का निर्माण किया जा सके। शिक्षा के अर्थ को उचित प्रकार से समझाने के लिए विभिन्न विद्वानों की परिभाशाओं को समझना आवश्यक है। महात्मागांधी जी के अनुसार–"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुश्य के शरीर, मस्तिश्क तथा आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों के सर्वांगीण विकास से है। "माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) के अनुसार "शिक्षा बच्चों को व्यवहारिक जीवन जीने की कला सिखाने की प्रकिया है।" दुर्खीम (1956) ने भी बालकों में शिक्षा द्वारा होने वाले विकास के संबन्ध में यह अवधारणा दी कि–"शिक्षा का अर्थ बालक के भौतिक, मानसिक और नैतिक पक्षों का आव्हान एवं विकास करना है।" अतः स्पश्ट है कि शिक्षा विकास की प्रकिया है। साथ ही यह जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रकिया है विकास का अभिप्राय है शरीर तथा मन मस्तिश्क की क्रमिक तथा सतत प्रगति अर्थात सीखने सिखाने की सुप्रयोजनयुक्त सतत प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है। स्पश्ट है कि शिक्षा नवजात शिशु का सर्वांगीण विकास करके उसे जीवन के विभिन्न उत्तरदायित्वों को समुचित ढंग से निर्वाह करने योग्य बनाती है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास करती है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान करता है, जीवन को अनन्दमय बनाता है तथा जन कल्याण के कार्यों की ओर प्रव्रत होता है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल खिल जाता है उसी प्रकार शिक्षा रूपी प्रकाश पाकर मानव जीवन कमल के पुश्प के समान खिल उठता है। तथा उसकी कीर्ति और यश चारो दिशा में फैल जाता है। और इसके विपरीत शिक्षा के अभाव में मनुश्य अज्ञानता, दरिद्रता व कश्ट के अंधकार में डूब जाता है।

शिक्षा द्वारा होने वाले विकास हेतु आवश्यक है शिक्षण एवं अध्ययन, जिसमें बहुत से कारक शामिल होते है। सीखने वाला जिस तरीके से अपने लक्ष्यों की ओर बडते हुए नये ज्ञान, आचार और कौशल को समाहित करता है। ताकि उसके सीखने के अनुभवों में विस्तार हो सके। पूर्व में शिक्षण पर विभिन्न किस्म के दृश्टिकोण उभरे है। इनमें से एक है ज्ञानात्मक शिक्षण, जो शिक्षण को मस्तिश्क की एक क्रिया के रूप में देखता है। दूसरा रचनात्मक शिक्षण जो ज्ञान को सीखने की प्रकिया में की गई

रचना के रूप में देखता है। बी. ओ. स्मिथ (1960) के अनुसार “शिक्षण अधिगम को उत्प्रेरित करने वाली एक प्रक्रिया है।” अर्थात शिक्षण से बालक प्रेरित हो कर बालक नवीन ज्ञान अर्जित करता है तथा उचित शिक्षण के माध्यम से बालक की शैक्षिक उपलब्धि विकसित की जा सकती है।

1.1 शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि या अकादमिक उपलब्धि उसे कहते है जो किसी विद्यार्थी, शिक्षक या संस्था द्वारा अपने लधुकालिक या दीर्धकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को किस हद तक प्राप्त किया है। तथा शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण से शिक्षकों द्वारा छात्रों का अर्जित ज्ञान के विशय में पता लगाया जा सकता है। उपलब्धि परीक्षण से शिक्षक यह ज्ञात करता है कि छात्रों ने किस सीमा तक विशय का ज्ञान अर्जित किया है तथा उनकी कितनी उन्नति हुई है। शैक्षिक उपलब्धि को आमतौर पर परीक्षाओं या निरन्तर आंकलन के माध्यम से मापा जाता है। लेकिन इस बात इस बात पर कोई सामान्य सहमति नही है। कि इसका सबसे अच्छा मूल्यांकन कैसे किया जाता है या कौन से पहलू सबसे महत्वपूर्ण है। प्रक्रियात्मक ज्ञान तथा कौशल या धोशणात्मक ज्ञान आदि ऐसे अनिर्णायक परिणाम है। जिन पर व्यक्तिगत कारक सफलतापूर्वक शैक्षिक प्रदर्शन की भविश्यवाणी करते हो। बालक की शैक्षिक उपलब्धि में उसके मनोभाव महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। वर्तमान समय में बालक के ज्ञानात्मक पक्ष के साथ साथ भावात्मक या संवेगात्मक पक्ष को सुदृढ़ बनाना अतिआवश्यक हैं।

1.2 संवेगात्मक परिपक्वता

सृश्टि के सभी प्राणियों में मनुश्य ही श्रेश्ट है मानव के व्यवहार, वाणी और विवेक से यह श्रेश्ठता प्रदर्शित होती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति के व्यहार को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया हैं। ज्ञानात्मक, क्रियात्मक, भावानात्मक। संवेग का सम्बन्ध भावात्मक व्यवहार से है। किसी वस्तु को देखकर व्यक्ति जिस मनोभाव का अनुभव करता है वह संवेग है। जब व्यक्ति के सामने कोई परिस्थिति उत्पन्न होती है तो वह उसका अवलोकन करता है। अवलोकन से उत्तेजित होकर वह क्रिया करता है जिसमें आन्तरिक तथा बाहय परिर्वतन होते हैं इसे ही उसका संवेगात्मक व्यवहार कहते हैं। मनुश्य अपनी रोजाना की जिन्दगी में सुख, दुख, भय, क्रोध, ईर्श्या, ग्रहणा आदि का अनुभव करता है। वह ऐसा व्यवहार किसी उत्तेजनावश करता है वह अवस्था संवेग कहलाती है तथा परिपक्वता बालक को संवेगों

नियन्त्रित करने में सहायक बालक को अपने संवेगो पर नियन्त्रण रखने योग्य बनाती है। संवेगात्मक परिपक्ता के छः आयाम होते है। 1 स्वयं ज्ञान 2 आत्मविश्वास 3 वास्तविकता की स्वीकृति 4 आत्म नियन्त्रण 5 सामाजिक समायोजन 6 सुसंगति ।

संवेगात्मक परिपक्वता की विशेशतायें–संवेगात्मक परिपक्वता की प्रमुख्य विशेशतायें निम्न प्रकार है– संवेगात्मक परिपक्वताव्यक्तिगत होती हैं।, बालकों में संवेगो की अस्थिरता पायी जरती हैं। , संवेगों के उत्पन्न हाने पर विचार प्रक्रिया का लोप हो जाता है।, संवेगो का स्थानान्तरण होता है। 5.संवेगों का मूल प्रवृत्तियों से सम्बन्ध होता है।, संवेगात्मक परिपक्वता की प्रवृत्ति क्रियात्मक होती है। तथा संवेगों में सुख, दुख भाव निहित होते है। प्रस्तुत विशेशताओं के आधार पर कह सकते हैं कि संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति की उत्तेजित दशा को नियनत्रित करती है जो व्यक्ति को मानसिक तथा शारीरिक रूप से प्रभावित करती है। संवेगात्मक परिपक्वता के लिए उचित शिक्षण की अवश्यकता होती है। जिसमें सबसे प्रमुख्य है निश्पादन कला समेकित शिक्षण।

1.3 निश्पादन कला

निश्पादन या प्रदर्शन कलाऐं वे कलाऐं है जिसमें कलाकार अपने ही शरीर ,मुखमंडल और भावभंगिमा आदि का प्रयोग कर कला का प्रदर्शन करता है। द्रश्य कला में निश्पादन कला के विपरीत कलाकार अपनी कला का उपयोग कर भैतिक वस्तुऐं बनाता है। जैसे कि एक चित्र या शिल्प। निश्पादन कला के अन्तर्गत कई कलाऐं मौजूद है। इन सब में साम्यता यह है कि सब को प्रत्यक्ष रूप से दर्शकों के सामने प्रदर्शित किया जाता है । निश्पादन कला के अन्तर्गत प्रमुख्य रूप से नृत्य, संगीत, रंगमंच और संबधित कलाऐं आती है। जादू, माइम, कठपुतली, सर्कस, गान और भाशण देना आदि इस कला के दूसरे रूप है। निश्पादन कला को प्रदर्शित करने वालों को कलाकार कहते है। ये कलाकार नायक, विदूशक, नर्तक, जादूगर, संगीतकार तथा गायक आदि होते है। निश्पादन कला के कलाकार वह भी है जो इस कला को पर्दे के पीछे से सहारा देते है। जैसे कि लिरिस्टिक और रंगमंच सूत्राधार। कलाकार उसके आवरण से जाते है। इसमें सिमट जाते है। रंगमंच निश्पादन कला की वह शाखा है जहॉ कहानियों को दर्शकों के सामने प्रदर्शित किया जाता है और यह प्रदर्शन संभाशण, इशारों, संगीत तथा नृत्य आदि के द्वारा किया जाता है। साधारण रूप से रंगमंच द्वारा प्रदर्शन में मूल रूप से संवाद को अधिक महत्व दिया

जाता है। रंगमंच एकांकी, संगीत सभा, नृत्य, इन्द्रजाल, जादू, मूककला, शस्त्रीय नृत्य, स्टांडअप कॉमेडी आदि रूप में किया जाता है।

1.4 निष्पादन कला समेकित शिक्षण

दुनियॉ में सभी व्यक्तियों का अभिव्यक्ति का तरीका प्रायः अलग–अलग होता है। किसी की अभिव्यक्ति दृ य हो सकती है, किसी की श्रव्य, किसी की स्पर्शात्मक। जब एक शिक्षक इन विभिन्न अभिव्यक्ति के माध्यम को अपनी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल कर लेते है तब वे व्यक्ति की संम्प्रेशण क्षमता अत्यधिक प्रभावी बनाने में सक्षम हो जाता है। निशपादनकला समेकित शिक्षण का तात्पर्य कला, संगीत, नृत्य, ड्रामा, कविता, रचनात्मक लेखन, खेल, रेत चित्र आदि विधाओं के शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में उपयोग से है ताकि ये प्रकृियाएं अत्यधिक प्रभावी हो सकें और छात्रों के सर्वांगीण विकास में मदद कर सकें। प्रदर्शन कला युक्त शिक्षण का तात्पर्य विचारों, अनुभवों एवं भावनाओं की संगीत चित्र, भाशा, मुद्रा, गति, भाव, भंगिमाओं के माध्याम से सुनियोजित अभिव्यक्ति है। जिसके द्वारा छात्रों को संवेदी, भावनात्मक, बौद्धिक एवं रचनात्मक रूप से समृद्ध किया जा सकता है कला युक्त शिक्षण के द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास में मद्द की जा सकती है।

समाज में उपलब्ध कई स्तरीय वस्तुऐं कई प्रकार की कलाओं से विकसित हुई हैं और वे संस्कृति विकास में सहायक एवं समाज कल्याण की भावना के विकास में सहायक हैं। निशपादनकला शिक्षण छात्रों को सम्प्रेशण के वैकल्पिक तरीके सीखने में मद्द करता है। यह विभिन्न व्यक्तिगत एवं नवीन विचारों को प्रोत्साहित भी करता है और छात्रों में बहुबुद्धि के विकास में अत्यन्त सहायक है। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर उद्देश्य पूर्ण कला शिक्षा जीवन को उन्नत करने एवं रचनात्मक क्षमता को उत्तेजित करने, विभिन्न कौशलों को बढाने एवं बालक के समायोजन में सहायक होती है। सुप्रसिद्ध प्रयोजनवादी शैक्षिक दार्शनिक जॉन डिवी (1906) के अनुसार कोई व्यक्ति क्या कर रहा है, इसका अनुभव करना एवं उस अनुभव का आनंद उठाना, उस संगामी अन्तर्जीवन की प्रक्रिया के एक पक्ष में खो जाना अक्सर सामग्री सन्दर्भों का तदनुसार सुनियोजित विकास करना ही कला है।

2.0 समस्या का प्रादुर्भाव

जिस तरह से शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है, इससे शिक्षा का स्वरूप ही बदलता जा रहा है। आज भागमभाग लगी है कि कैसे बलकों कितनी जल्दी आधुनिक तकनीकीयों से सिखाया जा सकता है जो उन्है डॉक्टर, इंजीनियर आदि बना दें। बालकों को स्वयं से सीखने का स्पेस खत्म होता जा रहा है। खुद करके देखने, सीखने और खोजने का आनंद खोता जा रहा है। या यह कह सकते हैं कि आज भी मैकाले शिक्षा पद्वति को बढ़ावा देकर बहुत सारे अधिकारी तो बनाये जा रहे है, परन्तु बापू और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शिक्षा दर्शन को भूलकर संवेदनशील व्यक्ति नही बना पा रहे है औरजब तक हम कला और शिक्षा के संबन्ध को नहीं समझेंगें, यह भी असंभव ही रहेगा।

NCERT ने कला शिक्षा के क्षेत्र में अपनी भूमिका और सदृढ़ करने की दृश्टि से अपने स्वयं के विभाग की स्थपना की जो कि डिर्पाटमेंट ऑफ एजूकेशन इन आर्ट्स एण्ड ऐस्थेटिक्स (DEAA) के नाम से जाना जाता है। इसका विकास विद्यालयों में कला विधाओं को प्रोत्साहित करने के लिए किया गया। डिपार्टमेंट ने बालक के सौन्दर्यात्मक गुणों को विकसित करने, उसे आदर्श नागरिक बनाने के लिए और संवेगात्मक विकास के लिए इस क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण तथा ऑरिएन्टेशन आदि का विकास किया। NCERT द्वारा प्रस्तावित पाठ्यचर्या 2005 (NCF2005) में कला विशय का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान राश्ट्रीय शिक्षा प्रणाली (1986) के तहत कला शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में एक अनिवार्य विशय के रूपमें अनुशासित किया गया है। इसी क्रम में 2015 में शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा सभी सरकारी व ऐडेड विद्यालयों के साथ मिलकर कला शिक्षा के उत्थान हेतु एक कदम उठाया गया।

इसी क्रम में प्रस्तुत शोध अध्ययन के क्षेत्र में पूर्व में हुए शोधों की संक्षिप्त समीक्षा अग्रलिखित रूप में प्रस्तुत की गयी है–

क्रम संख्या	शोधकर्ता एवं वर्श	शोध विशय	निश्कर्श
1	विनर व अन्य (2006)	हाउ विजुअल आर्टस टीचिगं कैन प्रमोट डिसिप्लेन्ड हैबिट ऑफ माइन्ड।	परिणाम में पाया कि दृश्य कलाऐं आदतों के विकास में भी पर्याप्त योगदान देतीं है। दृश्य साधन श्रव्य साधनों की अपेक्षा अधिक संतोशप्रद परिणाम देते हैं तथा सीखने के स्थानान्तरण को अधिक सुगम बनाते है।
2	दुबे, रुचि (2007)	स्नातक स्तर के	परिणाम में पाया कि स्नातक स्तर पर

		विद्यार्थियों में सांवेगिक बोद्धिकता एवं शैक्षिक निश्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन।	कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बोद्धिकता एवं शैक्षिक निश्पत्ति के मध्य सम्बन्ध होता है। केवल एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि गणित समूह के विद्यार्थियों की सांवेगिक बौद्धिकता तथा शैक्षिक निश्पत्ति में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।
3	रेसन, राबर्ट, डब्लू (2009)	अत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों का अध्ययन।	परिणाम में पाया कि आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य बहुत ही करीबी सम्बन्ध है। अर्थात जिनका आत्मविश्वास अच्छा होता है उन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बड़ती चली जाती है।
4	मेहता आलोक (2009)	ऐी 2009 सर्वे द् पार्ट ऑफ नेशनसःरिपोर्ट कार्ड आर्टस 2008 रिपोर्ट फाउन्ड देट एक्सल टू आर्टस एजूकेशन अपोरचिनिटीस होस्ट चेन्ज मच इन डेकेट।	इस रिपोर्ट में पाया गया कि थियेटर और नृत्य कार्यक्रमों के पश्चात पहले के मुताबिक संगीत, दृश्य कला की पहुॅच में वृद्धि हुई।
5	अग्रवाल सुरभि (2013)	माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि का संवेगात्मक वुद्धि, संवेगात्मक परिपक्वता और आत्मविश्वास के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।	परिणाम में पाया कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि में उसके आत्मविश्वास, उच्च और निम्न संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता, एवं जिनमें संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है उन विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि भी अच्छी होती है।
6	मृगांका नारायन दास और देवव्रत देब्रत (2014)	एकेडमिक अचीवमेंट एण्ड इमोशनल मैचुरिकी एमंग सेकेन्ड्री स्कूल स्टूडेन्टस ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग इन वेडरन डिस्ट्रिक्ट।	परिणाम में पाया गया कि कामकाजी माताओं की तुलना में गैर कामकाजी माताओं के पुरुश छात्रों में भावात्मक परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की पायी गई।
7	कुमार (2014)	इमोशनल मैचुरिटी ऑफ एडालसेंस स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू देयर फैमिली।	परिणाम में पाया कि लड़कों की अपेक्षा लड़कीयॉ भावात्मक परिपक्वता पर बेहतर प्रदर्शन करती हैं और उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च पायी गई।
8	अनीता (2014)	कार्यकारिणी व गृहणी महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन पर परिवार की प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन।	परिणाम में पाया कि गृहणीं महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा कार्यकरिणी महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है। तथा कार्यकारिणी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा गृहणी महिलाओं के बच्चे कम समायोजित होते है।
9	चमुण्डेश्वरी, एस0 तथा कुमारी, अर्चना	विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, विद्यालय वातावरण और अकादमिक उपलब्धि	परिणाम में पाया कि यू0 पी0 माध्यमिक स्तरीय विद्यालय एवं सेंट्रल बोर्ड के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की

	(2015)	का अध्ययन।	अनुकूलता में विद्यालय वातावरण और अकादमिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है।
10	जदब दत्ता,प्रनब चेत्या, जे0सी0 सोनी(2016)	ऐकेडमिक अचीवमेन्ट, इमोशनल मैचुरिटी एण्ड इण्टेलीजेंस ऑफ सेकेन्ड्री स्कूल स्टूडेन्टस इन असम।	परिणाम में पाया कि सरकारी स्कूल की अपेक्षा प्राइवेट स्कूल के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक परिपक्वता अधिक एवं साथ ही मानसिक रूप से बेहतर थे। अतः शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक परिपक्वता और बुद्धिमत्ता एक दूसरे से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है।
11	ढाका, सुरेश (2016)	शिक्षा चिकित्सा एवं अभियान्त्रिकी पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों, सृजनात्मकता व समायोजन पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन किया।	परिणाम में पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी छात्राओं के समायोजन में अन्तर पाया गया। गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन, व शैक्षिक समायोजन की दृश्टि से गृामीण छात्राऐं अधिक सजग पायी गयीं तथा भावात्मक दृश्टि से शहरी छात्राऐं अधिक समायोजित पायी गयीं।
12	मेंग एवं ट्रूडेल (2017)	'यूजिंग इमॉटिकान्स टूएनकरेज स्टूडेन्ट टू रिसाइकिल।'	परिणाम में यह पाया गया कि विद्यार्थियों द्वारा क्रोध प्रदर्शित करते हुए लाल रंग के इमॉटिकान बने कचरा पात्र में पुनर्चक्रण के लिए अधिक वस्तुऐं रखीं गयीं अपेक्षाकृत उन कचरा पात्रों के जो साधारण व सामान्य थे। प्रस्तुत अध्ययन दृ य कला के उच्च प्रभावों द्वारा व्यवहार परिवर्तन की ओर संकेत करता है जिसे निम्न लागत एवं कम तकनीक वाले इमॉटिकान के द्वारा भी प्राप्त किया जा सकता है।
13	मेरी लू हरी श्लोमो साविलोवस्की (2017)	इन्टीग्रेटिंग द् आर्टस इन टू हेड स्टार्ट क्लास रूम प्रोड्यूसड पॉजिटिव इम्पैक्ट ऑन किंडरगार्डन रीडनेस।	दो ग्रुप के बच्चों में से एक ग्रुप के माता पिता को कला आधारित शिक्षण रणनिति व सेवायें प्रदान की गईं और नाटक, संगीत के माध्यम से विशयों का अध्ययन कराया गया। दूसरे ग्रुप के बच्चों के माता पिता को सामान्य सेवायें प्रदान क गईं।परिणाम में दानों में सार्थक अन्तर पाया गया।
14	जोविता एफ. पुनजालान फिलीपिंस (2018)	द् इम्पेक्ट ऑफ विजुअल आर्ट्स इन स्टुडेन्टस एकेडमिक परफोरमेंस।	परिणाम में पाया गया कि छात्रों का परंपरागत व्याख्यान विधि की अपेक्षा दृश्य एवं प्रदर्शन कला से एकेडमिक परफोरमेंस अधिक अच्छा रहा।
15	सोंग(2018)	फोस्टरिंग कल्चरली रेसपोन्सिव स्कूलः स्टूडेन्ट आइडेन्टिटी डबलपमेन्ट इन क्रॉस कल्चरल क्लास रूम।	परिणाम में पाया कि कक्षागत शिक्षण के अन्तर्गत बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में कला शिक्षा द्वारा रचित शैक्षिणिक क्रियाकलाप अत्यन्त सफल सिद्ध होते है।
16	जेसिका	फाइन आर्ट् कोर्सेस हेल्थ स्टूडेन्टस एक्सल इन मैथ	परिणाम में पाया गया कि कला का एकीकृत पाठ्यक्रम छात्रों को विज्ञान

	बैरोनकेटिनर(2019)	एण्ड साइसं।	मानविकी और गणित विशय में उत्कृश्ट बनाने में मद्द करता है।

इसी प्रकार वर्तमान समय में शिक्षा को रूचिकर प्रभावपूर्ण व संवेदनशील बनाने के लिए और बालकों के सर्वांगीर्ण विकास के लिए निश्पादन कला युक्त शिक्षण की आवश्यकता है। इसी समस्या से प्रेरित हो कर शोधार्थिनी ने शोध समस्या का चयन किया। प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं प्रासांगिकता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर निश्पादन कला समेकित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।' को एक शोध शीर्शक के रूप में चुना है।

3.0 समस्या का कथन

"माध्यमिक स्तर के विद्याथियों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता पर निष्पादन कला समेकित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।"

4.0 अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में कला आधारित पाठयक्रम पर बहुत बल दिया जा रहा है, जिसमें निश्पादन कला को विशेश महत्व दिया गया है। निश्पादन कला आधारित शिक्षण से शिक्षा को व्यवहारिक बनाया जा सकता है। ड्यूवी महोदय प्रतिपादित करते है कि प्राथमिक कक्षाओं का पाठ्यक्रम रूचियों के आधार पर होना चाहिए । पाठ्यक्रम में कताई, बुनाई, कला, संगीत, बागवानी, गणना, लकडी का काम, चित्रकारी, नमूनेकारी भोजन आदि कार्यो को प्राथमिक शिक्षा से ही शामिल किया जाना चाहिए। इन सभी क्रियाओं द्वारा ही बालक पढना, लिखना, गिनना सीख जाते है। क्यों कि जब उन्है उनकी रूचि के अनुसार कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है तब वे स्वतंत्र रूप से स्वयं को सर्वांगीण व्यक्तित्व के रूप में विकसित कर पाते है। कक्षा शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है इसमें स्थिरता नहीं है। अतः यह स्वभाविक रूप से प्रवाहयुक्त दिशा में बालक के विकास को सुनिश्चित करती है। दूसरे शब्दों में यदि हम कहें तो यह एक जीवित प्रक्रिया है जो कि व्यक्ति को प्रगतिशील बनाती है, उसे कार्य करने को प्रेरित करती है।

शिक्षा अधिकारियों ने माध्यमिक स्तर पर विद्यालयी शिक्षा में कला युक्त शिक्षण के सुधार हेतु बहुत ही प्रगतिशील कार्य किये है विद्यालयी शिक्षा में अन्य कोई विशय जीवन के इतने निकट नहीं जितना कि

कला ि ाक्षा है। इसके द्वारा ही प्रत्येक बालकों को (व्यक्गितरूप से) अपने संवेगों के प्रदर्शन के अधिकतम अवसर प्राप्त होते है। निश्पादन कला को आत्मभिव्यक्ति की एक प्रक्रिया व अपने चारो ओर के सौन्दर्य की व्यख्या का साधन तो माना जाता है किन्तु उस तरह की शिक्षा की कोई व्यवस्था हमें प्रायः देखने को नहीं मिलती, मिलती भी है तो बहुत कम विद्यालयों में जिनमें कि कुछ सरकारी व प्राइवेट स्तर पर कार्यरत है।

NCERT ने 2005 में राश्ट्रीयपाठ्यचर्या की रूप रेखा का जो प्रारूप तैयार किया, उसमें विद्यालयी स्तर पर कला शिक्षा का विशेश महत्व दिया गया । विद्यालयी स्तर पर अधिकारियों से NCERT ने सिफारिश की, कि वो कला शिक्षा को पाठ्यक्रम में उचित सम्मान का स्थान प्रदान करें और इसका अनुसरण भी करें । इस प्रक्रिया में बालक के सिर्फ सिखाने पर जोर न देकर उसे सीखाने के अवसर प्रदान किये जायें, यह सुनिश्चित किया गया। इसी क्रम में आगे यह भी कहा गया कि अध्यापक बालकों के साथ मिल–जुल कर कार्य करें, केवल निर्देश मात्र न दें। इस तरह कार्य करने से बालकों के लिए सीखने की प्रक्रिया सरल व स्वभाविक हो जाती है। इस प्रकार कला द्वारा छात्रों में वांछित व्यवहार विकसित करने में सहायता मिलती है। माध्यमिक स्तर के छात्र शारीरिक व मानसिक रूप से देश समाज से जुडे गम्भीर मुद्दों को समझने में सक्षम होते है। यह देश की वह पीढ़ी है जो भविश्य में समाज का नेतृत्व करेगी। अतः इनके ज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ भावात्मक पक्ष को भी विकसित किया जाये तो क्रियात्मक पक्ष स्वतः ही विकसित हो जायेगा ।

5.0 अध्ययन में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

5.1 निष्पादन कला समेकित शिक्षण

निश्पादन कला से तात्पर्य ऐसे भावों से है जो मनुश्य द्वारा प्रदर्शित किये जाते है इसका प्रदर्शन किसी भी रूप में किया जा सकता है। निश्पादन कला के प्रदर्शन में कलाकार अपने शरीर, मुखमंडल, भावभंगिमा आदि का प्रयोग कर कला का प्रदर्शन करते है।

शिक्षण–शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक अपने ज्ञान को संप्रेशणीय कुशलता के आधार पर अपने विद्यार्थियों को उस ज्ञान से आत्मसात कराता है।

बी0ओ0 स्मिथ (1960) के अनुसारः– "शिक्षण अधिगम को उत्प्रेरित करने वाली एक पद्वति है।"

कार्यात्मक परिभाशाः—प्रस्तुत अध्ययन में निश्पादन कला युक्त शिक्षण की प्रकार्यात्मक परिभाशा इस प्रकार है। प्रस्तुत शोध में निश्पादन कला समेकति शिक्षण से तात्पर्य कला माध्यम के द्वारा कला के विविध पक्षों विशेशकर प्रदर्शन कला से तात्पर्य नाटक ,कठपुतली, संगीत, नृत्य, माइम आदि द्वारा किये जाने वाले शिक्षण से है।

5.2 शैक्षिक उपलब्धि

एनास्टासी (1938) केअनुसार शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थीयों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है। जिसका परिणाम उनको वार्शिक परीक्षा में किये गये कार्यों से मिलता है।

कार्यात्मक परिभाशा—प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय माध्यमिक स्तर के कक्षा 9 विद्यार्थियों के शिक्षण के उपरान्त प्राप्त किये गये प्राप्तांकों से लिया जायेगा।

5.3 संवेगात्मक परिपक्वता

वर्तमान में प्रत्येक मनुश्य को जीवन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है फिर वह बालक हो युवा हो या प्रौढ़ हो। कठिनाईयाँ दैनिक जीवन में अनेक समस्याओं को जैसे—भय, क्रोध, चिन्ता, कुन्ठा और मानसिक रोगो को जन्म देती है। सांवेगिक परिपक्वता केवल व्यक्तित्व का एक प्रभावी निर्धारित तत्व ही नहीं बल्कि यह किशोरों के विकास को करने में सहायता करती है और बालक को अपने संवेगो पर नियन्त्रण रखने योग्य बनाती है।

कार्यात्मक परिभाशा—संवेगात्मक परिपक्वता से तात्पर्य छात्रों के स्वयं समायोजन से तथा संवेगों पर नियन्त्रण रख कर उनका अनुकूल अवसरों पर सुनियोजित प्रकार से प्रकटीकरण से है। बालक के चरित्र निर्माण में संवेगात्मक परिपक्वता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

5.4 मध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

मध्यमिक शिक्षा आयोग (1960) के अनुसार "इस स्तर पर वह शिक्षा दी जाती है जो प्राथमिक शिक्षा के पश्चात विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करती है।"

कार्यात्मक परिभाशा–प्रस्तुत अध्ययन में दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट से सम्बद्ध प्रेम विद्यालय के माध्यमिक स्तर की कक्षा 9 की छात्राओं को शामिल किया जायेगा।

6.0 अध्ययन के उद्देश्य

1 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर निशपादन कला समेकित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।

2 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर निशपादन कला समेकित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।

3 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता पर निशपादन कला समेकित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।

4 मध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

7.0 अध्ययन की परिकल्पनाऐं

Hα**1** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर निशपादन कला समेकित शिक्षण का सार्थक प्रभाव होगा।

Hα2 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर निशपादन कला समेकित शिक्षण का सार्थक प्रभाव होगा।

Hα3 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता पर निशपादन कलासमेकित शिक्षण का सार्थक प्रभाव होगा।

Hα4 मध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सम्बन्ध होगा।

8.0 अध्ययन का परिसीमांकन

अध्ययन का निम्न प्रकार परिसीमांकन किया जायेगाः–

1 अध्ययन के लिए केवल हिन्दी विशय का ही चयन किया जायेगा तथा चयनित विशयवस्तु के आधार पर 20 पाठ्ययोजनाऐं निर्मित की जायेगीं।

2 अध्ययन को शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता तक ही सीमित किया जायेगा।

3 न्यादर्श के रूप में केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मलित किया गया है।

4 निश्पादन कला समेकित शिक्षण में नाटक, कटपुती, संगीत, न्त्य, माइम आदि को सम्मलित किया जायेगा।

9.0 अध्ययन के चर

स्वतन्त्र चर–निश्पादन कला समेकित शिक्षण।

परतन्त्र चर–शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक परिपक्वता।

नियन्त्रित चर–शोध प्रारूप के माध्यम से नियन्त्रित चरों को योजना चरण में निम्न विधियों द्वारा नियन्त्रित कर लिया जायेगा।

तालिकाः मध्यवर्ती चर व उनके नियन्त्रण की विधियाॅ

नियन्त्रित चर	नियन्त्रण की विधि
आयु	स्थिरता
लिंग	स्थिरता
कक्षा	स्थिरता
अध्ययन का समय	स्थिरता
संस्थागत विभिन्नता	चयन
शोर	निश्कासन

10.0 अध्ययन की विधि

शोध अध्ययन की विधि के रूप में शोध की प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा जिसके अन्तर्गत दो समूह (पूर्व और पश्च्) परीक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

11.0 अध्ययन की प्रक्रिया एवं प्रारूप

शोध अध्ययन की प्रक्रिया एवं प्रारूप इस प्रकार है–

तलिका 1 : प्रयोगात्मक समूह एवं नियन्त्रित समूह के प्रारूप प्रदर्शित करती तालिका

कम संख्या	**स्मूह**	**पूर्व परीक्षण**	**शिक्षण**	**पश्च परीक्षण**
1	प्रयोगात्मक समूह	शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता मापनी	निश्पादन कला समेकित शिक्षण (20 पाठ्योजनाऐं)	शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता मापनी
2	नियन्त्रित समूह	शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता मापनी	परम्परागत व्यख्यान विधि से शिक्षण (20 पाठ्योजनाऐं)	शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता मापनी

11.1 अध्ययन की प्रकिया

अध्ययन की प्रक्रिया को तीन चरणों में विभक्त किया गया है–

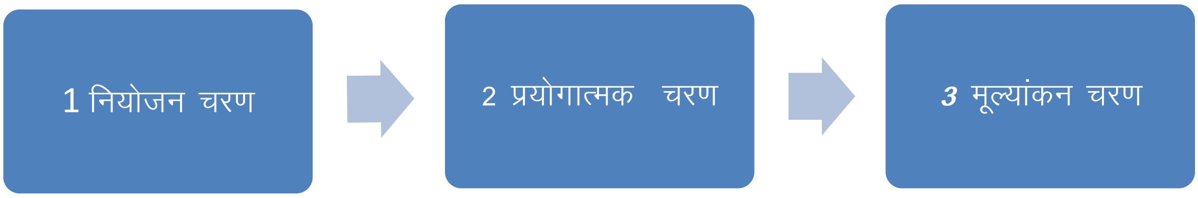

प्रथम चरण: नियोजन–सर्वप्रथम प्रयोगात्मक समूह व नियन्त्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का मूल्यांकन किया जायेगा अर्थात पूर्व परीक्षण किया जायेगा। तत्पश्चात शोधार्थिनी द्वारा निश्पादन कला युक्त शिक्षण कराने योग्य प्रकरणों का चयन कक्षा 9 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के विश्लेशण के आधार पर विशयवस्तु विश्लेशण किया जायेगा। तथा चयनित प्रकरणों के आधार पर शोधार्थिनी द्वारा निश्पादन कला समेकित शिक्षण व परम्परागत विधि आधारित पाठ्ययोजनाओं का निर्माण निम्न प्रकार किया जायेगा –

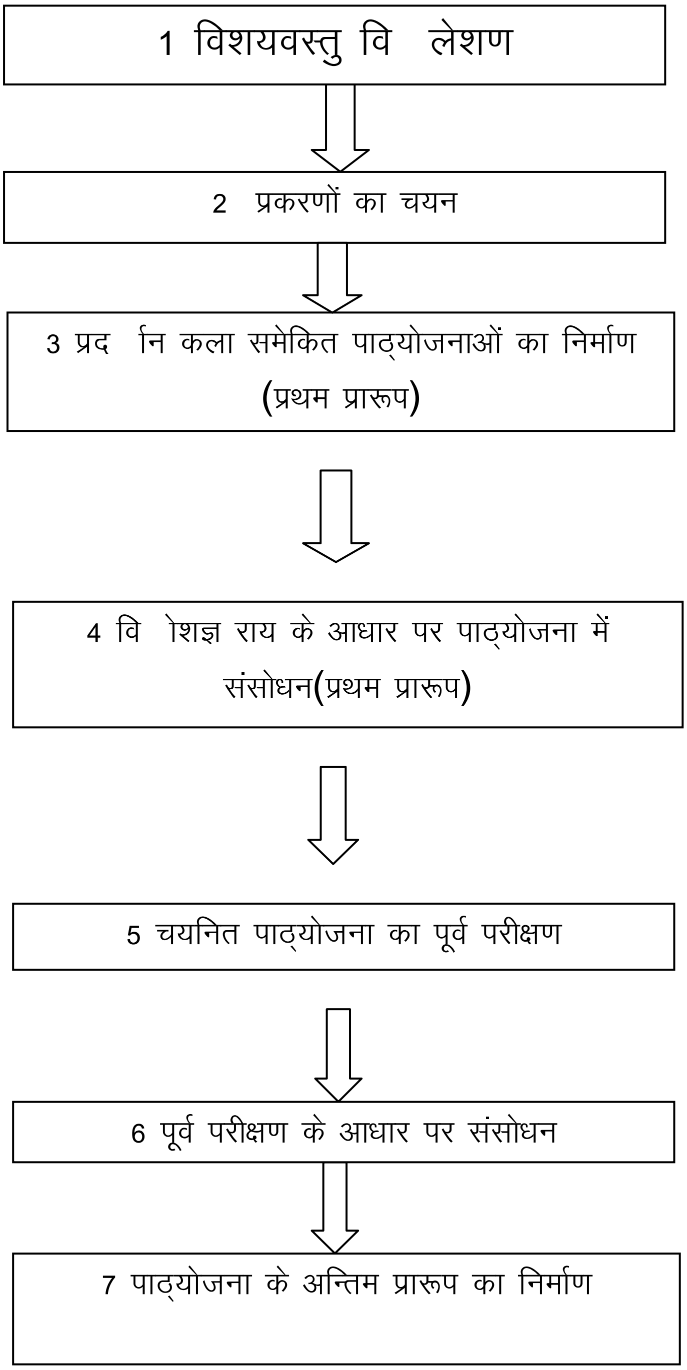

द्वितीय चरणः प्रयोगात्मक–शोधार्थिनी द्वारा प्रयोगात्मक समूह पर निश्पादन कला समेकित 20 पाठ्योजनाओं तथा नियन्त्रित समूह पर परम्परागत विधि आधारित 20 पाठ्योजनाओं के आधर पर शोधार्थिनी द्वारा कक्षा–कक्ष शिक्षण किया जायेगा। तथा दानों समूहों की उपस्थित प्रतिदिन रजिस्टर में दर्ज की जायेगी।

तृतीय चरणः मूल्यांकन– प्रस्तुत चरण के अन्तर्गत हिन्दी शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा संवेगात्मक परिपक्वता परीक्षण का प्रशासन किया जायेगा तथा प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर निशपादनकला समेकित शिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन किया जायेगा और निश्कर्श प्राप्त किये जायेगें।

12.0 अध्ययन न्यादर्श चयन

न्यादर्श चयन के लिए निम्न प्रक्रिया अपनायी जायेगी–

न्यादर्श के लिए प्रेम विद्यालय में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर की कक्षा 9 की 40–40 छात्राओं का चयन यादृच्छिकरण विधि से किया जायेगा।

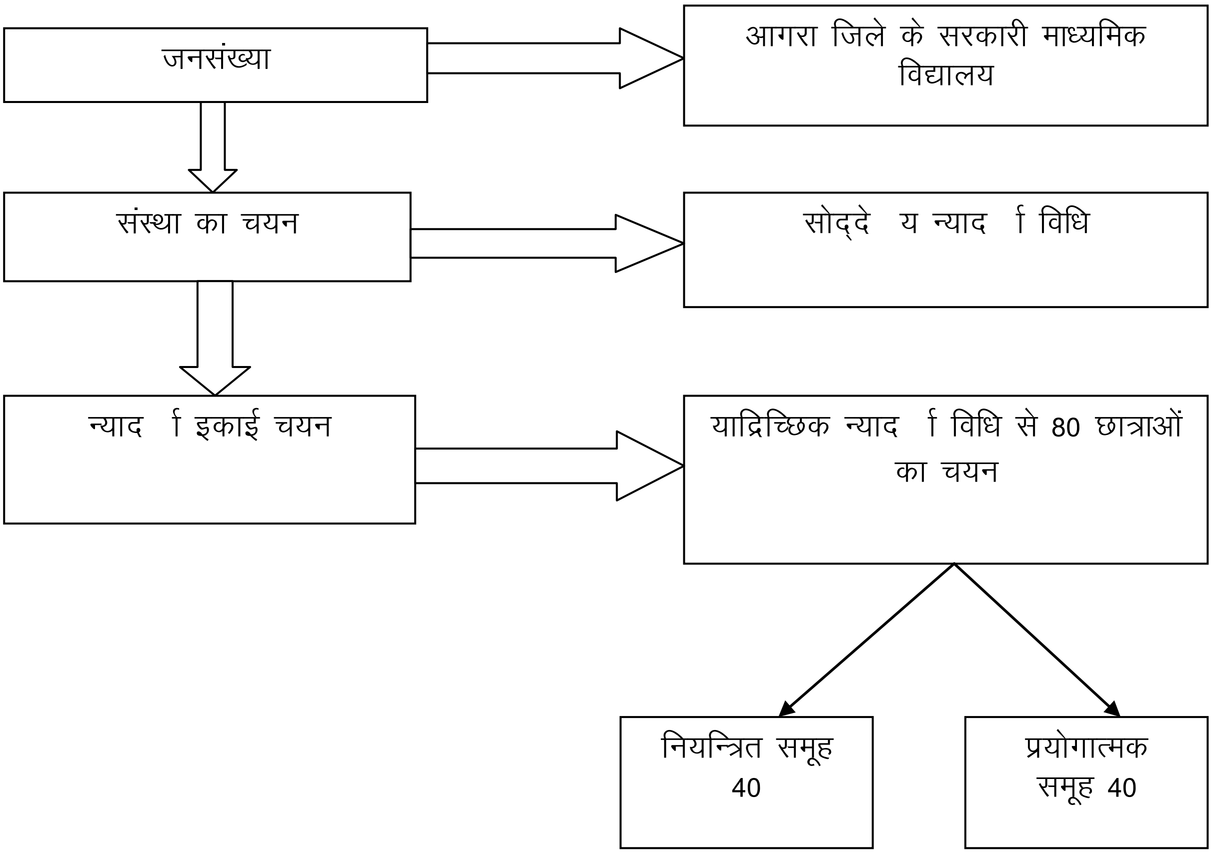

13.0 अध्ययन के उपकरण

अध्ययन के उपकरण अग्रप्रकार है–

शैक्षिक उपलब्धि के उपकरण के रूप में छात्रों को पढ़ाये गये हिन्दी विशय के पाठों के आधार पर शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित हिन्दी उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया जायेगा।

सांवेगिक परिपक्वता के उपकरण के रूप में तारा सभापति द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (2017)का प्रयोग किया जायेगा।

14.0 सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुतशोध के अन्तर्गत निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

मध्यमान,

मानक विचलन,

टी–परीक्षण

सहसंबन्ध विधि, आंशिक सहसंबन्ध विधि।

15.0 शोध अध्ययन की उपादेयता

- बालक को भौतिक, सामाजिक, मानसिक, तथा सांवेगिक रूप से उन्नत बनाने के लिए जिन तत्वों की आवश्यकता होती है। वे सभी तत्व शिक्षा में निहित होते है परन्तु शिक्षण प्रभावी हो तभी बालक का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है और शिक्षा को प्रभावी तथा उन्नतशील, निशपादन कला समेकित शिक्षण से बनाया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध के परिणाम इस तथ्य को उद्धाटित करने में सहायक होगें कि शैक्षिक उपलब्धि व सांवेगिक परिपक्वता के परिवर्तन में निशपादन कला समेकित शिक्षण कितना प्रभावशाली है। अतः संज्ञानात्मक विकास से भावात्मक विकास किस प्रकार हो सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा मुख्य रूप से किशोर बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व सांवेगिक परिपक्वता के विकास में सहायता मिलेगी।
- वर्तमान शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान देकर उन्हें पाठ्यक्रम को पूर्ण करवाने पर जोर दिया जा रहा है परन्तु बालकों में आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, वास्तविकताकी

स्वीकृति, स्वंनियन्त्रण, सामाजिक समायोजन, सुसंगति तथा स्थिरता जैसे महत्वपूर्ण आयामों की अवहेलना की जा रही है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस दृश्टि से भी उपयोगी है।

- प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा में नवीन विधियों, प्रविधियों को खोजने में एक विकासात्मक चरण है। अतः अध्ययन के माध्यम से इस तथ्य का भी पता लगाया जा सकता है कि वर्तमान पीढ़ी में शिक्षा के प्रति जो अरुचि है उसमें निश्पादन कला समेकित शिक्षण क्या भूमिका निर्वाह कर सकता है।
- यह अध्ययन शिक्षाविदों के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्यों कि अध्ययन के माध्यम से प्रदर्शन कला समेकित शिक्षण को प्रशिक्षणार्थियों के लिए पाठ्यक्रम का भाग बनाने में मार्गदर्शन प्राप्त होगा साथ ही अध्ययन इस दृश्टि से भी उपयोगी है स्कूल, कॉलेजों में नवीन विधियों के रूप में निश्पादन कला समेकित पाठ्योजना का प्रयोग करने में रुपरेखा प्राप्त हो सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अरोरा, डॉ. नीलम, (2018), कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति,(भाग–2), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिशद् रायपुर छत्तीसगढ़

अग्रवाल, विमल. (2018), मनोविज्ञान, प्रकाशन एस. बी. डी. पब्लिकेशन आगरा

अवस्थी, सुरेश, (2012), भारत में प्रदर्शन परम्परा, नेशनल बुक पब्लिकेशन, इंडिया

आइजनर, ई. (2003), द् आर्ट एंड दि क्रियेशन ऑफ माइंड, न्यम हेवन, सी टीः येल यूनिवर्सिटी प्रेस.

आर्चर, डबल्यू. जी, (1959), इंडिया एण्ड मॉर्डन आर्ट, पब्लिकेशन लंदन एन. वाई.

औड़, लक्ष्मी लाल के. (2008), शिक्षा की दार्शनिक पृश्ठभूमि, 10वॉ संस्मरण, प्रकाशन, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

बुम्बेट, स्टू., (2013), एनहासिंग सेल्फ कॉन्सेप्ट थ्रू एन इन्टिग्रेटिड आर्ट प्रोजेक्ट, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड आर्ट, 222–248

बोस, एन. (1955), भारतीय कला का सिंहावलोकन, इलाहाबाद, साहित्य भवन प्रकाशन.

बोरोविंग, फिनले, आर्टबेस्ट इनक्वायरी, आई. क्यू, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशनएण्ड आर्ट, 9 (2) 281–296

चौधरी, अशोक, (2016), शिक्षा के साथ प्रयोग, प्रकाशन प्रभात प्रकाशन 4/19 आशफअली रोड नई दिल्ली.110002

गैरिट, हेनरी, ई. (1986), स्टेटिस्टिकस इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन, लीगमेन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क

गुड, एवं स्केट्स, (1966), मैथडलोजी ऑफ रिसर्च, सइकोलॉजी एण्ड सोशलॉजी , सेन्चुरी कफटस इडक न्यूयार्क

हॉनर, हग. एफ. जे.,(2006), द् विजुअल हिस्ट्री ऑफ आर्ट, अबराम्स पब्लिशर एन. वाई प्रेस

कपिल, एच. पी. (2004), अनुसंधान विधियॉं, प्रकाशन एच. पी. भार्गव बुक हाउस कचहरी घाट आगरा.

पाठक, आर. पी., (2015), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, प्रकाशनः डार्लिंग किंडरस्ले इंडिया प्रा. लि. दक्षिण एशिया में पियर्सन पब्लिकेशन

पाण्डेय, के. पी. (1999), शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

राश्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005, एन. सी. आर. टी. प्रका ान कार्यालय नयी दिल्ली प्रथम संसकरण मई 2006 , पृश्ठ संख्या– 9 ,11, 62 134, 135

रस्क, आर. आर. (1972), शिक्षा के दार्शनिक आधार, प्रकाशन, जयपुर हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

सिंह, सतनाम. (2015), शिक्षा का समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधारगत परिपेक्ष्य, पब्लिकेशन एशियन पुस्तक प्रकाशन.

सुलैमान, मुहम्मद. (2014), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाशन मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली.

शर्मा, आर. ए. (2008), शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, प्रकाशन लायल बुक डिपो, मेरठ

सक्सेना, एन. आर. स्वरूप. (2006), शिक्षा सिद्धान्त, 11वॉ संस्मरण , सूर्या पब्लिकेशन मेरठ

शर्मा, आर. ए. (2001), शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

सिंह, बी. पी., शिक्षा का समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक एवं समाजशस्त्रीय आधार, प्रकाशन श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा.

त्यागी, जी. एस. डी., शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार, नवीनतम संस्मरण विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा.

यैंग व दामासियो (2008). एन आर्टफुल पोट्रेट इन क्वालिटेटिव इंक्वायरी. एल्ब्रेटा जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड रिसर्च 31, 337–341